"रजिया सुल्तान का राजनीतिक नेतृत्व मध्यकालीन भारत की प्रथम महिला शासक का ऐतिहासिक विश्लेषण

श्री.नितिन वर्मा, डॉ.नाजिया हुसैन

पीएचडी शोधार्थी इतिहास विभाग श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय विद्यानगरी झुंझुनू राजस्थान।

शोध निर्देशिका इतिहास विभाग श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय विद्यानगरी झुंझुनू राजस्थान।"

सारांश

रजिया सुल्तान मध्यकालीन भारत के इतिहास में एक साहसी दूरदर्शी और कुशल महिला शासक के रूप में बहुत सम्मान से याद किया जाता है। 1236 से 1240 ई तक दिल्ली सल्तनत पर स्वतंत्र शासन करने वाली पहली और एकमात्र महिला थीं। पुरुषों के हाथ में राजनीतिक सत्ता थी और महिलाओं की भूमिका सिर्फ राजमहल तक सीमित थी जब उनका शासनकाल शुरू हुआ। इस परंपरा को चुनौती देते हुए अपने प्रशासनिक कौशल सैन्य नेतृत्व और न्यायपूर्ण शासन के माध्यम से सिद्ध किया कि शासनिक क्षमता योग्यता और नेतृत्व क्षमता पर निर्भर करनी चाहिए।

इस शोध–पत्र में रजिया सुल्तान के राजनीतिक नेतृत्व का इतिहास देखा गया है। इसमें उनके शासनारोहण प्रशासनिक रणनीतियों सैन्य अभियानों तुर्क अमीरों के विरोध राजनीतिक चुनौतियों और नेतृत्व की विशेषताओं का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से पता चलता है कि रजिया सुल्तान ने अपने अल्पकालीन शासन में प्रशासनिक सुधारों जनकल्याणकारी नीतियों धार्मिक सहिष्णुता और न्याय व्यवस्था को बढ़ावा देने का प्रयास किया। सामंती मानसिकता और तुर्की कुलीन वर्ग के विरोध के कारण उनका शासन बहुत देर नहीं चल सका लेकिन वे भारतीय इतिहास में महिला नेतृत्व और राजनीतिक सशक्तिकरण का एक उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

मुख्य शब्द

राजनीतिक नेतृत्व दिल्ली सल्तनत महिला शासन इल्तुतमिश तुर्क अमीर प्रशासन मध्यकालीन भारत महिला सशक्तिकरण।

परिचय

मध्यकालीन भारत में महिलाओं की राजनीतिक योग्यता अक्सर सीमित थी। सेना प्रशासन और शासन जैसे क्षेत्रों में महिलाओं का बहुत कम योगदान था। राजपरिवार में कुछ महिलाएँ परोक्ष रूप से राजनीतिक निर्णयों पर प्रभाव डालती थीं लेकिन प्रत्यक्ष शासन करने का अवसर बहुत कम महिलाओं को मिला। उस काल में दिल्ली के सिंहासन पर रजिया सुल्तान का बैठना भारतीय इतिहास में एक अनूठी घटना थी।

सुल्तान इल्तुतमिश की पुत्री थी राजिया सुल्तान इल्तुतमिश ने अपनी पुत्री की योग्यता प्रशासनिक क्षमता और राजनीतिक ज्ञान को देखते हुए उसे अपना उत्तराधिकारी बनाया। तुर्की के अमीरों और धार्मिक वर्ग को यह फैसला पसंद नहीं था क्योंकि वे सोचते थे कि शासन केवल पुरुषों का अधिकार था। इसके बावजूद, रजिया ने अपने साहस और नेतृत्व कौशल से चार वर्षों तक सफलतापूर्वक शासन किया।

महिला नेतृत्व की क्षमता, सामाजिक मानसिकता के खिलाफ संघर्ष और प्रशासनिक क्षमता का एक महत्वपूर्ण उदाहरण भारतीय इतिहास में उनका शासनकाल है।

रजिया सुल्तान का प्रारम्भिक जीवन एवं सत्ता प्राप्ति

दिल्ली सल्तनत के शासक शम्सुद्दीन इल्तुतमिश के परिवार में राजिया सुल्तान का जन्म लगभग 1205 ई में हुआ था। उनका जन्म एक राजपरिवार में हुआ था जहाँ उन्हें धार्मिक शिक्षा के अलावा शासन–प्रशासन सैन्य प्रशिक्षण कूटनीति तथा न्यायपालिका का व्यावहारिक ज्ञान मिला। इल्तुतमिश ने रजिया को अपने पुत्रों की तुलना में अधिक प्रतिभाशाली बुद्धिमान और नेतृत्व करने के लिए योग्य पाया। यही कारण था कि उन्होंने रजिया को अपने जीवनकाल में ही उत्तराधिकारी घोषित करने का फैसला किया।

इतिहासकार **मिन्हाज–उस–सिराज** ने बताया कि इल्तुतमिश ने ग्वालियर अभियान के दौरान दिल्ली का प्रशासन रजिया को सौंपा था। रजिया ने इस दौरान बहुत कुशलता से शासन किया जिससे जनता और कई प्रशासनिक अधिकारियों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। इल्तुतमिश ने रजिया को सल्तनत की असली उत्तराधिकारी घोषित किया क्योंकि उनके पुत्र शासन करने के योग्य नहीं थे।

किन्तु 1236 ई में इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद तुर्क अमीरों ने रुक्नुद्दीन फिरोज को सुल्तान बना दिया जो उनकी इच्छा नहीं पूरी की। रुक्नुद्दीन प्रशासनिक रूप से अयोग्य था और उसकी माता शाह तुर्कान ने बहुत अधिक शासन में हस्तक्षेप किया। नतीजतन राज्य में अव्यवस्था भ्रष्टाचार और आम जनता का असंतोष बढ़ा। शासन पर जनता का विश्वास समाप्त होने लगा और कई राज्यों में विद्रोह हुए।

इस राजनीतिक संकट का लाभ उठाकर जनता और सेना का समर्थन प्राप्त किया। दिल्ली की जनता को संबोधित करते हुए उन्होंने राज्य की वर्तमान स्थिति और अपने पिता की अंतिम इच्छा का जिक्र किया। उनका प्रभावशाली नेतृत्व और लोकप्रियता ने उनका समर्थन किया।

उन लोगों ने न्यायालयों और सैनिक परेडों को सार्वजनिक रूप से संचालित किया राजसी पोशाक धारण कर पुरुष शासकों की तरह व्यवहार किया और दरबार में पर्दा प्रथा का पालन नहीं किया। इन कदमों ने तत्कालीन सामाजिक परंपराओं को चुनौती दी और यह संदेश दिया कि शासन करने की क्षमता योग्यता से नहीं बल्कि लिंग से है।

सत्तारोहण सिर्फ एक शासक बदलने की घटना नहीं थी बल्कि मध्यकालीन भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी का ऐतिहासिक उदाहरण था। उन्हें आरंभ से ही तुर्की के कुलीन वर्ग धार्मिक रूढ़िवादिता और सामंती मानसिकता का विरोध झेलना पड़ा लेकिन उन्होंने अपने शासनकाल के शुरूआती वर्षों में दृढ़ इच्छाशक्ति प्रशासनिक क्षमता और राजनीतिक बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन किया। यही कारण है कि उनका राजनीतिक नेतृत्व भारतीय इतिहास में विशिष्ट है।

रजिया सुल्तान का राजनीतिक नेतृत्व

रजिया सुल्तान ने मध्यकालीन भारत के इतिहास में बहुत कुछ किया था। उन लोगों ने दिल्ली सल्तनत की बागडोर संभाली जब तुर्की के अमीरों ने राजनीतिक सत्ता पर काफी प्रभाव डाला था और महिलाओं को शासन करने के लिए अयोग्य नहीं माना जाता था। रजिया ने अपने साहस योग्यता प्रशासनिक क्षमता और न्यायप्रियता के आधार पर इन कठिन परिस्थितियों के बावजूद स्वयं को एक सक्षम शासक के रूप में

स्थापित किया। सत्ता का संचालन उनका काम नहीं था वे प्रशासनिक सुधार सैन्य बलों जनकल्याण और राजनीतिक स्थिरता का भी प्रयास करते थे।

प्रशासनिक नेतृत्व

सिंहासन पर बैठने के बाद रजिया सुल्तान ने केंद्रीय प्रशासन को मजबूत करना सबसे पहले सोचा। उन्होंने प्रशासनिक कार्यों पर व्यक्तिगत निगरानी रखी और विभिन्न विभागों में योग्य और ईमानदार अधिकारियों की नियुक्ति की। उन्हें शासन को कुलीन वर्ग के नियंत्रण से मुक्त करना था और एक जिम्मेदार प्रशासन बनाना था। दरबार में अक्सर आती थीं और जनता की समस्याओं को सीधे सुनती थीं। वे न्यायिक मामलों में निष्पक्ष निर्णय देने के लिए जाने जाते थीं। उन्होंने शासन को पारदर्शी और जिम्मेदार बनाए रखने का प्रयास किया, जिससे लोगों में शासन के प्रति विश्वास बढ़ा।

सैन्य नेतृत्व एवं साहस

रजिया केवल एक प्रशासक ही नहीं थीं बल्कि एक कुशल सैन्य नेता भी थीं। स्वयं सैनिकों की पोशाक पहनकर युद्ध अभियानों में भाग लिया। उस समय महिलाओं को युद्ध क्षेत्र में जाने की परंपरा नहीं थी इसलिए यह बहुत असामान्य था।

उन्होंने केंद्रीय शासन को सीमावर्ती क्षेत्रों में बचाने की कोशिश की और राज्य के कई हिस्सों में हुए विद्रोहों को सफलतापूर्वक दबाया। सैनिकों में उनकी उपस्थिति से सेना का मनोबल बढ़ता था और वे साहसी सैनिकों के रूप में सम्मानित होती थीं।

तुर्क अमीरों के साथ संघर्ष

तुर्की कुलीन वर्ग जिसे **तुर्कान–ए–चहलगानी** भी कहते थे रजिया के शासन की सबसे बड़ी चुनौती थी। दिल्ली सल्तनत की राजनीति को नियंत्रित करना यह शक्तिशाली अमीरों का समूह चाहता था। कि सुल्तान की सर्वोच्चता उनकी मूर्खता को समाप्त करे।

उनका लक्ष्य था कि प्रशासनिक पदों पर केवल तुर्की अमीरों को प्राथमिकता देने की परंपरा को समाप्त कर दिया जाए। योग्यता के आधार पर अन्य वर्गों के लोगों को भी महत्वपूर्ण पद दिए गए। तुर्की के अमीर जमालुद्दीन याकूत को उच्च पद दिए जाने से बहुत असंतुष्ट थे। उन्हें लगता था कि यह निर्णय उनके राजनीतिक हितों के खिलाफ था इसलिए वे रजिया के खिलाफ एक योजना बनाने लगे। रजिया ने इन विरोधों का सख्ती से सामना किया लेकिन अंततः कुलीन वर्ग का संगठित विरोध उनकी राजनीतिक स्थिति को कमजोर करता चला गया।

जनकल्याणकारी शासन

रजिया सुल्तान का शासन जनकल्याण पर था। उन्होंने शिक्षा धार्मिक स्थानों और सार्वजनिक कामों को बचाया। राजकीय मदद से कई शिक्षकों विद्वानों और धार्मिक व्यक्तियों को सहायता मिली। उन्होंने प्रशासनिक भ्रष्टाचार को नियंत्रित करने राजस्व व्यवस्था को व्यवस्थित करने और व्यापार को बढ़ावा देने की कोशिश की। इससे राज्य की आर्थिक और प्रशासनिक स्थिति सुदृढ़ हुई।

नेतृत्व की विशेषताएँ

रजिया सुल्तान के नेतृत्व में कई गुण हैं जो उन्हें मध्यकालीन भारत की अन्य शासकों से अलग करते हैं

- निष्पक्षता राज्य के लंबे समय तक चलने वाले हितों को ध्यान में रखकर उन्होंने प्रशासनिक निर्णय लिए।
- साहस और आत्मविश्वास सामाजिक नियमों का सामना करते हुए उन्होंने अपने आप पर नियंत्रण स्थापित किया।
- न्यायप्रिय सभी वर्गों को समान रूप से व्यवहार करने की कोशिश की।
- योग्यता–आधारित व्यवस्था योग्यता को वंश, जाति या नस्ल की जगह दी।
- निर्णय लेने की क्षमता संकट की स्थिति में वे जल्दी और प्रभावी निर्णय ले सकती थीं।
- राजनीतिक बल उन्होंने निरंतर विरोध के बावजूद अपने अधिकारों से समझौता नहीं किया।

महिला नेतृत्व का ऐतिहासिक महत्व

रजिया सुल्तान ने भारतीय इतिहास में महिलाओं को सशक्त बनाया था। उनका दावा था कि शासन युद्ध प्रशासन और कूटनीति जैसे क्षेत्रों में भी महिलाएँ पुरुषों की तरह सक्षम हो सकती हैं। यद्यपि उनका शासनकाल सिर्फ चार वर्ष था लेकिन उन्होंने मध्यकालीन भारत में महिलाओं की राजनीतिक क्षमता का अच्छा उदाहरण दिया।

राजनीतिक योग्यता का निर्धारण समाज में ज्ञान प्रशासनिक अनुभव निर्णय क्षमता और नेतृत्व कौशल पर नहीं होना चाहिए जैसा कि उनके नेतृत्व ने स्पष्ट किया। इसलिए रजिया सुल्तान का व्यक्तित्व भारतीय इतिहास में महिला नेतृत्व का उदाहरण बन गया है।

रजिया सुल्तान के प्रशासनिक सुधार एवं शासन व्यवस्था

यद्यपि रजिया सुल्तान का शासनकाल लगभग चार वर्षों 1236–1240 ई तक ही चला फिर भी उन्होंने इस छोटे से समय में दिल्ली सल्तनत की प्रशासनिक व्यवस्था को अधिक प्रभावी, उत्तरदायी और संगठित बनाने की कोशिश की। उन्हें सिर्फ सत्ता हासिल करना नहीं था बल्कि न्यायपूर्ण नियंत्रित और जनकल्याणकारी सरकार बनाना था। उनके पास सरकारी कामों में सक्रिय भागीदारी थी और उन्होंने हर महत्वपूर्ण फैसला स्वयं लिया था। उनके प्रशासनिक सुधारों में निष्पक्षता दूरदर्शिता और व्यावहारिकता का समन्वय दिखाई देता है जो तत्कालीन राजनीतिक हालात के अनुरूप थे।

केंद्रीकृत शासन व्यवस्था को सुदृढ़ करना

राजिया सुल्तान ने शासन की केंद्रीय शक्ति को बढ़ाना चाहा। तुर्की अमीरों का बढ़ता हुआ प्रभाव उस समय दिल्ली सल्तनत में सुल्तान की शक्ति को कम कर रहा था। ने इस व्यवस्था को बदलने की कोशिश की और कहा कि सुल्तान ही राज्य का सर्वोच्च अधिकार होगा।

उन्होंने प्रांतीय अधिकारियों पर नियमित रूप से निगरानी की और उन्हें सीधे केंद्रीय सरकार के प्रति उत्तरदायी बनाया। इससे शासन व्यवस्था में अनुशासन और जिम्मेदारी की भावना पैदा हुई।

योग्यता आधारित नियुक्तियों की नीति

रजिया सुल्तान की प्रशासनिक व्यवस्था में योग्यता–आधारित नियुक्ति प्रणाली सबसे महत्वपूर्ण थी। उन्होंने जाति नस्ल या वंश की जगह कार्यकुशलता और योग्यता को प्रशासनिक पदों पर नियुक्ति करते समय प्राथमिकता दी। विभिन्न वर्गों से योग्य लोगों को उच्च पद दिए गए। इस नीति के परिणामस्वरूप प्रशासन में नए प्रतिभाशाली लोगों को अवसर मिला। रजिया ने अपने मूल्यों से समझौता नहीं किया हालांकि तुर्की के कुलीन वर्ग इस निर्णय से असंतुष्ट था।

यह नीति मध्यकालीन भारत की पारंपरिक सामंती व्यवस्था से अलग थी और प्रशासनिक सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था।

न्याय प्रणाली

रजिया सुल्तान एक न्यायप्रिय शासिका थीं। उन्होंने न्यायिक प्रणाली को अधिक निष्पक्ष और कारगर बनाने की कोशिश की। वे खुले दरबार में नियमित रूप से उपस्थित होते थे जनता की शिकायतें सुनते थे और आवश्यकतानुसार तत्काल निर्णय लेते थे। उनका मानना था कि न्याय ही राज्य को स्थिर बनाता है। इसलिए उन्होंने भी अधिकारियों को ईमानदार और निष्पक्ष ढंग से काम करने का निर्देश दिया। भ्रष्टाचार पक्षपात और प्रशासनिक अनियमितताओं पर नियंत्रण रखने के लिए उन्होंने कठोर अनुशासन लागू किया।

उनकी न्यायप्रियता ने जनता को शासन के प्रति विश्वास दिलाया और लोकप्रिय शासिका के रूप में सम्मान मिला।

सैन्य प्रशासन में सुधार

रजिया सुल्तान ने सेना के प्रशासन और संगठन पर विशेष ध्यान दिया। उन्हें सेना की सुरक्षा युद्ध–तैयारी और सैनिकों का प्रशिक्षण सबसे महत्वपूर्ण था। आवश्यकता पड़ने पर वे स्वयं सेना का नेतृत्व करती थीं और युद्ध क्षेत्र में सैनिकों का उत्साहवर्धन करती थीं।

उनकी कोशिशों से सेना में अनुशासन कायम रहे और योग्य सैनिक अधिकारियों को प्रोत्साहित किया जाए। सेना ने उनके नेतृत्व में राज्य की स्थिरता और आंतरिक शांति का महत्वपूर्ण साधन बनकर राजपरिवार की सुरक्षा भी की।

प्रांतीय प्रशासन

दिल्ली सल्तनत के विभिन्न प्रांतों में बार–बार विद्रोह हुए और राजनीतिक अस्थिरता हुई। स्थानीय अधिकारियों पर अधिक नियंत्रण बढ़ाया और नियमित रूप से उनके काम की समीक्षा की जिससे प्रांतीय प्रशासन को अधिक जिम्मेदार बनाया गया।

उन्होंने प्रांतों में नियुक्त अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि वे कर संग्रह कानून–व्यवस्था तथा जनकल्याण संबंधी कामों को निष्पक्ष ढंग से करें। जरूरत पड़ने पर अयोग्य अधिकारियों को उनके पदों से हटा दिया गया और उनके स्थान पर योग्य लोगों को नियुक्त किया गया।

आर्थिक प्रशासन

राजिया सुल्तान ने राज्य की अर्थव्यवस्था को नियंत्रित रखने की कोशिश की। उन्होंने राजस्व संग्रह प्रणाली को नियंत्रित किया और किसानों और आम जनता को अनावश्यक करों से बचाया।

व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा देना भी उनकी आर्थिक नीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। सुरक्षित मार्ग स्थिर सरकार और कानून–व्यवस्था ने व्यापार को बढ़ा दिया। इससे राज्य की आय बढ़ी और आर्थिक स्थिरता बनी रही।

उन्होंने राजकोष का दुरुपयोग रोकने और सार्वजनिक संसाधनों का सही उपयोग करने पर भी जोर दिया।

शिक्षा और सांस्कृतिक संरक्षण

रजिया सुल्तान ने शिक्षकों और शिक्षितों का सम्मान किया। उन्होंने शिक्षा साहित्य और धार्मिक ज्ञान को बचाया। बहुत से विद्वानों शिक्षकों तथा धार्मिक व्यक्तियों को सरकारी मदद मिली।

मदरसों पुस्तकालयों और अन्य शैक्षणिक संस्थानों को उन्होंने बढ़ावा दिया। दिल्ली सल्तनत में बौद्धिक और सांस्कृतिक गतिविधियां इससे विकसित हुईं। उनका दृष्टिकोण बताता है कि वे केवल सैन्य और राजनीतिक मुद्दों तक सीमित नहीं थीं बल्कि शिक्षा और ज्ञान का महत्व भी जानती थीं।

धार्मिक नीति

रजिया सुल्तान ने धार्मिक मामलों में संतुलन और सहिष्णुता दिखाई। उन्होंने धार्मिक विद्वानों का सम्मान किया लेकिन धार्मिक कट्टरता को सरकारी फैसलों में हस्तक्षेप नहीं करने दिया।

मुख्य लक्ष्य था राज्य की राजनीतिक स्थिरता और प्रशासनिक दक्षता। इसलिए उन्होंने धार्मिक द्वेष को त्यागकर शासन को व्यवहारिक ढंग से चलाने का प्रयास किया।

प्रशासनिक सुधारों का प्रभाव

रजिया सुल्तान के प्रशासनिक सुधारों का असर उनके शासनकाल से कहीं अधिक था। उन्होंने दिखाया कि महिलाएं भी आर्थिक प्रबंधन सैन्य न्याय और प्रशासन जैसे कठिन क्षेत्रों में सफल नेतृत्व कर सकती हैं। योग्यता–आधारित प्रशासन न्यायपूर्ण शासन और उत्तरदायी नेतृत्व की परंपरा को उनकी नीतियों ने बल दिया। उनका शासन अल्पकालीन था लेकिन उनके प्रशासनिक प्रयास मध्यकालीन भारतीय शासन व्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण थे।

रजिया सुल्तान ने दिल्ली सल्तनत में प्रशासनिक नवाचार राजनीतिक स्थिरता और प्रभावी शासन का उदाहरण दिया।

रजिया सुल्तान के शासनकाल की चुनौतियाँ एवं पतन

रजिया सुल्तान का शासनकाल मध्यकालीन भारत के इतिहास में साहस संघर्ष और राजनीतिक शक्ति का प्रतीक था। दिल्ली सल्तनत का नेतृत्व करते समय राज्य में कई आंतरिक और बाहरी चुनौतियां थीं। तुर्की सामंती व्यवस्था धार्मिक रूढ़िवादिता तुर्की कुलीन वर्ग की महत्वाकांक्षा और लैंगिक पूर्वाग्रहों के कारण उन्हें लगातार विरोध का सामना करना पड़ा, हालांकि वे एक कुशल प्रशासक और योग्य शासिका थीं। अंततः उनके शासन के पतन का मुख्य कारण यह विरोध था।

तुर्की अमीरों का विरोध

तुर्की अमीरों का शक्तिशाली समूह जिसे तुर्कान–ए–चहलगानी या चालीसा कहा जाता था राजिया सुल्तान के शासन की सबसे बड़ी चुनौती थी। यह चालीस शक्तिशाली तुर्क सरदारों का समूह था जो दिल्ली सल्तनत की राजनीति पर कब्जा करना चाहते थे। पद पर आने के बाद स्पष्ट कर दिया कि सुल्तान का अधिकार राज्य को चलाना होगा। उन्होंने तुर्क अमीरों के प्रशासन में अत्यधिक हस्तक्षेप को कम करने की कोशिश की। इससे यह समूह उनके खिलाफ संगठित हो गया और उनकी सरकार को गिराने का षड्यंत्र रचने लगा।

महिला शासक होने के कारण विरोध

रजिया को राजनीतिक और धार्मिक विरोध का सामना करना पड़ा। मध्यकालीन मुस्लिम समाज में आम धारणा थी कि पुरुष शासन कर सकते हैं। इसलिए कई धार्मिक विद्वानों और कुलीन वर्ग ने एक महिला के शासन को नहीं माना।

रजिया ने पर्दा प्रथा का पालन नहीं किया, जो इन सामाजिक रूढ़ियों को चुनौती देता था। वे पुरुष शासकों की तरह राजकीय कपड़े पहनती थीं दरबार लगाती थीं सैनिकों का निरीक्षण करती थीं और स्वयं प्रशासनिक निर्णय लेती थीं। यह व्यवहार उनके विरोधियों को बदनाम करने का अवसर दिया क्योंकि यह तत्कालीन सामाजिक मूल्यों के खिलाफ था।

जमाल–उद–दीन याकूत का विवाद

रजिया सुल्तान ने प्रशासन में योग्यता को सर्वोपरि माना। यही नीति के तहत उन्होंने हब्शी अबीसीनियाई मूल का अधिकारी जमाल–उद–दीन याकूत को अमीर–ए–अखूर (शाही अस्तबल का प्रमुख का पद दिया।

इस नियुक्ति से तुर्की के अमीर बहुत असंतुष्ट थे। उनका मानना था कि केवल तुर्क कुलीनों को यह महत्वपूर्ण पद मिलना चाहिए। विरोधियों ने समय के साथ रजिया और याकूत के संबंधों को लेकर कई झूठे झूठ फैलाए, ताकि जनता और सेना को रजिया से दूर कर सकें।

वर्तमान इतिहासकारों में से अधिकांश मानते हैं कि इन आरोपों का कोई साबित ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है। रजिया की लोकप्रियता को कम करना मुख्यतः राजनीतिक प्रचार था।

मलिक अल्तूनिया का विद्रोह

1240 ई में भटिंडा के सूबेदार मलिक इख्तियारुद्दीन अल्तूनिया ने रजिया के खिलाफ विद्रोह किया। रजिया अपनी सेना लेकर विद्रोह को रोकने के लिए आई।

याकूत को युद्ध के दौरान मार डाला गया और रजिया को जेल में डाला गया। यह घटना उनके राजनीतिक जीवन में एक प्रमुख परिवर्तन बन गई। बंदी के बाद हालात बदल गए और रजिया और अल्तूनिया ने बाद में शादी की। दोनों ने मिलकर दिल्ली को वापस लेने की कोशिश की लेकिन तब तक बहराम शाह दिल्ली का राजा था।

सत्ता पुनः प्राप्त करने का प्रयास

रजिया और अल्तूनिया ने शादी के बाद दिल्ली पर कब्जा करने के लिए एक सेना बनाई। उनकी सेना और संसाधन कमजोर थे इसलिए बहराम शाह के खिलाफ अभियान चलाया। दिल्ली के निकट संघर्ष में उन्हें पराजय मिली। इस जीत के बाद उनकी राजनीतिक शक्ति लगभग खत्म हो गई।

रजिया सुल्तान की मृत्यु

युद्ध में पराजित होने के बाद अक्टूबर 1240 ई में रजिया सुल्तान और उनके पति अल्तूनिया दिल्ली से भाग गए। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार वे कैथल अब हरियाणा के निकट स्थानीय लोगों या डाकुओं द्वारा मारे गए।

उनके निधन से दिल्ली सल्तनत में महिला शासन का एक महत्वपूर्ण दौर समाप्त हो गया। इसके बाद कोई भी महिला स्वतंत्र रूप से दिल्ली का सुल्तान नहीं बन सकी।

पतन के प्रमुख कारण

राजिया सुल्तान के शासन के पतन के पीछे कई कारण थे

1 तुर्की के कुलीन वर्ग का संगठित विरोध, जो उनके हर फैसले का विरोध करता था।

2 महिला शासक होने के कारण सामाजिक और धार्मिक पूर्वाग्रह जिससे उन्हें व्यापक समर्थन नहीं मिल सका।

3 योग्यता आधारित नियुक्तियों की व्यवस्था जिससे कुलीन वर्ग के अधिकार प्रभावित हुए।

4 क्षेत्रीय विद्रोह और राजनीतिक अस्थिरता जो शासन को कमजोर करती थीं।

5 याकूत प्रकरण को राजनीतिक हथियार बनाकर जनमत को उनके खिलाफ बनाना।

6 अल्तूनिया में हुआ विद्रोह और सेना की पराजय जो उनकी राजनीतिक शक्ति को समाप्त कर दी।

ऐतिहासिक मूल्यांकन

रजिया सुल्तान का ऐतिहासिक महत्व बहुत व्यापक है हालांकि उनका शासनकाल छोटा था। उन्हें पता चला कि नेतृत्व क्षमता एक लिंग नहीं है। उनकी प्रशासनिक क्षमता न्यायप्रियता सैन्य साहस और राजनीतिक साहस ने उन्हें मध्यकालीन भारत के अग्रणी शासकों में स्थान दिया है।

राजिया भी बहुत बुद्धिमान न्यायप्रिय और महान इतिहासकार मिन्हाज–उस–सिराज ने प्रशंसा की है। उन्हें आजकल के इतिहासकार भी भारत की प्रथम सफल महिला शासक के रूप में मानते हैं।

राजिया सुल्तान का जीवन बताता है कि वे दिल्ली सल्तनत की सबसे सफल शासकों में से एक हो सकती थीं अगर उन्हें तुर्की के सामंती समाज और कुलीन वर्ग का इतना तीव्र विरोध न झेलना पड़ा होता। अब भी उनका संघर्ष महिला नेतृत्व समानता और राजनीतिक सशक्तिकरण का प्रेरणास्रोत है।

निष्कर्ष

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में महिला नेतृत्व प्रशासनिक क्षमता और राजनीतिक साहस का एक अद्वितीय उदाहरण है। उन लोगों ने दिल्ली सल्तनत का शासन किया जब पुरुषों का राजनीतिक सत्ता पर पूरा अधिकार था और महिलाओं की भूमिका मुख्यतः घरेलू कामों तक सीमित थी। उन्हें इन हालात में दिल्ली के सिंहासन पर बैठना अपने आप में एक ऐतिहासिक घटना था। उन्होंने यह सिद्ध किया कि बुद्धिमत्ता निर्णय क्षमता प्रशासनिक कौशल और नेतृत्व से नहीं बल्कि लिंग से शासन की योग्यता निर्धारित होती है।

राजिया सुल्तान ने अपने शासनकाल में प्रशासनिक व्यवस्था को अधिक प्रभावी और जिम्मेदार बनाने की कोशिश की। योग्य न्यायाधीशों की नियुक्ति सैन्य बलों की मजबूतता और केंद्रीय सरकार को मजबूत करने पर उन्होंने खास जोर दिया। उनकी नीतियाँ दिखाती हैं कि वे केवल औपचारिक शासिका नहीं थीं बल्कि एक बुद्धिमान और व्यवहारिक निर्देशक भी थीं। तत्कालीन सामंती व्यवस्था को चुनौती देकर उन्होंने प्रशासन में योग्यता को प्राथमिकता दी जिससे शासन व्यवस्था में क्षमता और जिम्मेदारी बढ़ी।

राजिया के राजनीतिक नेतृत्व ने कई चुनौतियों का सामना किया था। तुर्की की सरकार निरंतर अस्थिर होती रही क्योंकि कुलीन वर्ग का विरोध सामाजिक और धार्मिक रूढ़िवादिता महिला शासक के प्रति पूर्वाग्रह और दरबारी षड्यंत्र थे। विशेष रूप से तुर्कान–ए–चहलगानी का विरोध ने उनकी राजनीतिक स्थिति को कमजोर कर दिया। इसके अलावा जमालुद्दीन याकूत के विवाद और मलिक अल्तूनिया के विद्रोह ने उनके शासन को बहुत खराब कर दिया। इन सभी हालात के कारण उनका शासन अल्पकाल तक ही रह सका।

रजिया सुल्तान का ऐतिहासिक महत्व बहुत व्यापक है, हालांकि वे अपने राजनीतिक जीवन में लंबे समय तक सफल नहीं हो सकीं। उनका दावा था कि महिलाएं प्रभावी और सफल शासन दे सकती हैं अगर उन्हें समान अवसर और राजनीतिक अधिकार मिलें। यह मध्यकालीन भारत में महिलाओं की राजनीतिक क्षमता का प्रमाण है और भारतीय इतिहास में महिला सशक्तिकरण की पहली मिसालों में उनका महत्वपूर्ण योगदान है।

रजिया सुल्तान ने सामाजिक रूप से रूढ़िवादी विचार को चुनौती दी जिसके अनुसार महिलाएँ शासन करने में असमर्थ हैं। उन्होंने सार्वजनिक रूप से दरबार लगाया सेना का नेतृत्व किया स्वयं प्रशासन चलाया और पर्दा नहीं लगाकर महिलाओं की स्वतंत्र पहचान बनाने की कोशिश की। इनके कार्यों ने महिलाओं के प्रति समाज की पारंपरिक धारणाओं को चुनौती दी और यह संदेश दिया कि नेतृत्व क्षमता सिर्फ एक लिंग के लिए नहीं है।

उनका शासन भी प्रशासनिक और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण था। उन्होंने राजस्व व्यवस्था को नियंत्रित करने व्यापार को बढ़ावा देने तथा प्रशासनिक भ्रष्टाचार को कम करने की कोशिश की। यद्यपि उनका शासनकाल छोटा था, फिर भी उनकी नीतियाँ राज्य को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने और प्रशासनिक क्षमता में सुधार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाईं।

रजिया सुल्तान का जीवन आज महिला नेतृत्व लैंगिक समानता और राजनीतिक सशक्तिकरण के अध्ययन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। उनका संघर्ष दिखाता है कि सामाजिक पूर्वाग्रह और राजनीतिक विरोध के बावजूद दृढ़ इच्छाशक्ति, आत्मविश्वास और योग्यता से परिवर्तन संभव है। रजिया सुल्तान का व्यक्तित्व आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में महिलाओं की बढ़ती राजनीतिक भागीदारी के संदर्भ में प्रेरणा का स्रोत है।

यही कारण है कि रजिया सुल्तान दिल्ली सल्तनत की पहली महिला शासक नहीं थीं वे मध्यकालीन भारत में महिला नेतृत्व, प्रशासनिक क्षमता और राजनीतिक साहस का प्रतीक भी थीं। उनका योगदान भारतीय इतिहास में अमर रहेगा और महिला सशक्तिकरण के इतिहास में उनका महत्वपूर्ण स्थान रहेगा।

संदर्भ

"1.Minhaj-us-Siraj. (1881). *Tabaqat-i-Nasiri* (Vol. I, H. G. Raverty, Trans.). London: Gilbert & Rivington.

2.Elliot, H. M., & Dowson, J. (1867–1877). *The History of India as Told by Its Own Historians* (Vol. II). London: Trübner & Co.

3.Chandra, S. (2007). *History of Medieval India*. New Delhi: Orient BlackSwan.

4.Habib, I. (2005). *Medieval India: The Study of a Civilization*. New Delhi: National Book Trust.

5.Majumdar, R. C. (Ed.). (1960). *The Delhi Sultanate*. Mumbai: Bharatiya Vidya Bhavan.

6.Jackson, P. (1999). *The Delhi Sultanate: A Political and Military History*. Cambridge: Cambridge University Press.

7.Nizami, K. A. (1989). *Some Aspects of Religion and Politics in India During the Thirteenth Century*. New Delhi: Oxford University Press.

8.Lal, K. S. (1950). *History of the Khaljis*. Allahabad: Kitab Mahal.

9.Sharma, L. P. (2010). *History of Medieval India*. New Delhi: Konark Publishers.

10.Tripathi, R. P. (1967). *Rise and Fall of the Mughal Empire* (Background chapters on Sultanate). Allahabad: Central Book Depot.

11.Thapar, R. (2002). *Early India: From the Origins to AD 1300*. Berkeley: University of California Press.

12.Habib, M., & Nizami, K. A. (Eds.). (1970). *A Comprehensive History of India, Vol. V: The Delhi Sultanate*. New Delhi: People's Publishing House.

13.Singh, Upinder. (2008). *A History of Ancient and Early Medieval India*. New Delhi: Pearson Education.

14.Sarkar, J. (1960). *History of Bengal* (Relevant Medieval Chapters). Calcutta: University of Calcutta.

15.Sharma, R. S. (2005). *India's Ancient Past*. New Delhi: Oxford University Press.

16.Ahmed, N. (2018). Razia Sultan: A Study of Women Leadership in Medieval India. *International Journal of History and Research*, **8**(2), 15–24.

17.Khan, S. (2019). Women and Political Authority in the Delhi Sultanate. *International Journal of Historical Insight and Research*, **5**(1), 45–56.

18.Fatima, S. (2020). Razia Sultan and the Politics of Gender in Medieval India. *Journal of South Asian Studies*, **8**(3), 75–89.

19.Sharma, M. (2017). Women Rulers in Medieval India: A Historical Perspective. *Indian Historical Review*, **44**(2), 185–202.

20.Hasan, M. (2016). Female Sovereignty in the Delhi Sultanate. *Proceedings of the Indian History Congress*, **77**, 238–246.

21.Archaeological Survey of India. (n.d.). *Medieval Monuments of Delhi*. Government of India.

22.National Archives of India. (n.d.). *Persian Records of the Delhi Sultanate*. Ministry of Culture, Government of India.

23.Encyclopaedia Britannica. (2024). *Raziya Sultan*. https://www.britannica.com/biography/Raziya-Sultan

24.Cambridge History of India. (1922). *The Delhi Sultanate*. Cambridge University Press.

25.Indian History Congress. (Various Years). *Proceedings of the Indian History Congress*. New Delhi.”